नई दिल्ली | 25 फरवरी 2020 मंगलवार बिज़नेस स्टैंडर्ड

चीनी निर्यात कोटे का फिर से आवंटन

रॉयटर्स
नई दिल्ली/मुंबई, 24 फरवरी

उत्पादन में कमी की वजह से कुछ चीनी उत्पादकों द्वारा निर्यात में विफल रहने के बाद भारत ने 600,000 से अधिक टन के गैर-इस्तेमाल वाले चीनी निर्यात कोटे का पुनः आवंटन किया है। कोटे के पुन:वितरण से आने वाले महीनों में दुनिया के इस सबसे बड़े चीनी उत्पादक देश से निर्यात बढ़ सकता है और इससे वैश्विक कीमतों पर असर देखा जा सकता है जो इस महीने के शुरू में ढाई वर्ष के ऊंचे स्तर पर पहुंच गई थीं।

उपभोक्ता मामलों, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय ने परिपत्र में कहा है कि मिलों के निर्यात प्रदर्शन की समीक्षा के बाद 611,797 टन के निर्यात कोटे को पुन:वितरित किया गया है। कई वर्षों तक गन्ने की बंपर पैदावार और रिकॉर्ड चीनी उत्पादन से भारतीय चीनी की कीमतें प्रभावित हुई हैं जिससे चीनी मिलों को किसानों का बकाया चुकाना मुश्किल हो गया है। बकाया घटाने और बढ़ते इन्वेंट्री में कमी लाने के लिए केंद्र सरकार ने 2019/20 सीजन में 60 लाख टन निर्यात के लिए प्रति टन 10,448 रुपये की सब्सिडी मंजूर की है।

लेकिन खासकर महाराष्ट्र से चीनी मिलें उत्पादन में कमी की वजह से चीनी निर्यात में विफल रही हैं, क्योंकि वहां सूखे और बाढ़ से गन्ने की खेती प्रभावित हुई थी।

नैशनल फेडरेशन ऑफ को-ऑपरेटिव शुगर फैक्टरीज लिमिटेड के प्रबंध निदेशक प्रकाश नाईकनवरे ने कहा, 'सरकार ने सही समय पर निर्यात कोटे के पुन: वितरण की पहल की है। इससे आने वाले महीनों में निर्यात में तेजी आएगी।' नाईकनवरे ने कहा कि भारत 30 सितंबर को समाप्त हो रहे 2019/20 विपणन वर्ष में 50 लाख टन चीनी का निर्यात कर सकता है। भारत ने 2018/19 के लिए 50 लाख टन का निर्यात लक्ष्य तय किया था, लेकिन मिलें केंद्र द्वारा प्रोत्साहनों के बावजूद सिर्फ 38 लाख टन का निर्यात करने में ही सफल रहीं।

एक सरकारी अधिकारी ने नाम नहीं बताने के अनुरोध के साथ कहा कि केंद्र ने मिलों के निर्यात प्रदर्शन की लगातार समीक्षा की है और वह अप्रैल में 300,000 से 400,000 टन का निर्यात कोटा पुनः आवंटित कर सकता है। एक वैश्विक कारोबार कंपनी के मुंबई स्थित डीलर ने कहा कि वैश्विक कीमतों में तेजी से उन मिलों के लिए निर्यात आकर्षक हो गया है जिनके पास अतिरिक्त चीनी मौजूद है। भारतीय चीनी मिल संगठन (इस्मा) ने पिछले सप्ताह कहा कि भारतीय चीनी मिलों ने 2019/20 के सीजन में अब तक 32 लाख टन चीनी निर्यात के लिए अनुबंध किए हैं और लगभग 16 लाख टन की आपूर्ति की जा चुकी है। इस्मा का मानना है कि 2019/20 में देश का चीनी उत्पादन एक साल पहले के मुकाबले 21.6 प्रतिशत घट सकता है जो तीन वर्षों में सबसे निचला स्तर होगा।

50 टन पहुंच सकता है चीनी का निर्यात

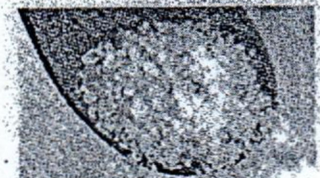

खाद्य मंत्रालय में संयुक्त सचिव सुबोध सिंह ने कहा कि ऊंची वैश्विक मांग से चालू विपणन वर्ष (अक्टूबर-सितंबर) के दौरान चीनी का कुल निर्यात 50 लाख टन पर पहुंच सकता है। भारत ने 2018-19 के विपणन वर्ष में 50 लाख टन के अनिवार्य कोटा पर 38 लाख टन चीनी का निर्यात किया था। अधिकारी ने कहा कि इस साल देश का कुल चीनी उत्पादन 2.7 करोड़ टन रह सकता है। इससे पिछले दो वर्ष के दौरान चीनी का उत्पादन 3.3 करोड़ टन रहा था। अभी तक चीनी मिलें 1.6 से 1.7 करोड़ टन चीनी का उत्पादन कर चुकी हैं। इस साल पेट्रोल में एथनॉल के मिश्रण के बारे में सिंह ने कहा कि हम पांच प्रतिशत यानी 1.9 अरब लीटर के स्तर को हासिल कर पाएंगे। हालांकि, इसके लिए नीति 10 प्रतिशत की है। सिंह ने कहा, 'इस साल इसे हासिल करना मुश्किल होगा क्योंकि महाराष्ट्र में गन्ने का उत्पादन काफी घट गया है। हालांकि, हम पांच प्रतिशत को हासिल कर पाएंगे।' देश में अभी एथनॉल का उत्पादन 355 करोड़ लीटर है। हालांकि, पेट्रोलियम विपणन कंपनियों (ओएमसी) की जरूरत 511 करोड़ लीटर की है। *भाषा*